हिन्दी व्याकरण और संप्रेषण

ईकाई 1:- समास, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, लिंग-निर्णय, अनेक शब्दो के एक शब्द, मुहावरे एवं लोकोतियाँ, पल्लवन एवं संक्षेपण

ईकाई 2:- संप्रेषण : अवधारणा और महत्व, संप्रेषण : प्रकार, माध्यम एवं तकनीक

समास

जब दो या दो से अधिक शब्द अपने विभक्ति पदों को छोड़कर एक साथ मिल जाते हैं तो उक उस मेल होने को 'समास' कहते हैं।

समास के भेद–समास के छह भेद माने जाते है–

(i) **अव्ययीभाव समास** :- यथाशक्ति, हररोज।

(ii) **तत्पुरूष समास**– राजकुमार, राष्ट्रपति।

(iii) **कर्मधारय समास**– कुरंगनयनी, सरोजपाणि।

(iv) **द्विगु समास**– पञ्चप्रदीप, नवरत्न।

(v) **द्वंद्व समास**– माता-पिता, सीता-राम।

(vi) **बहुब्रीहि समास**– पीताम्बर (श्रीकृष्ण), शशिशेखर (महादेव)।

(i) **अव्ययीभाव समास** :- जिस समास में पूर्वपद प्रधान होता हैं, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं। यह पूर्वपद निश्चित रूप से अव्यय पद होता हैं। उदाहरणार्थ जिन समस्त पदों के पूर्वपद यथा, आ, प्रति, वे, निर, नि एवं स आदि उपसर्गो वाले हों उन्हे सामान्यतया 'अव्ययीभाव' समास समझना चाहिए। आगे इस वर्ग के समस्त पदो के कतिपय उदाहरण विग्रह सहित दिये जाते हैं-

अधिकांश–अधिक अंश	देखते-देखते–देखते ही देखते
अनुरूप–रूप में अनुकूल	निर्विवाद–बिना विवाद के
आजीवन–जीवनपर्यन्त	प्रतिवर्ष–प्रत्येक वर्ष
आजन्म–जन्म से	प्रतिदिन–प्रत्येक दिन
एकाएक–एक-ब-एक	प्रतिशत–प्रत्येक सौ
घर-घर–एक घर से दूसरे घर	प्रत्यक्ष–अक्षि (आँखों) के सामने

(ii) **तत्पुरूष समास**– जिस समास में समस्त पदो में उत्तर पद प्रधान होता हैं, उसे तत्पुरूष समास कहते हैं। इस समास में पूर्वपद उत्तर पद में कुछ विशेषता जोड़ देता है। उदाहरणार्थ 'राजकुमार' पद को देखा जा सकता हैं। इस समस्त पद में दो शब्द है–राजा का कुमार। प्रधानता उत्तर पद यानी 'कुमार' शब्द की है। पूर्वपद इसमें कुछ विशेषता जोड़ देता है। यथा, 'किसका कुमार?' तो 'राजा का'।

तत्पुरूष के भेद– 'तत्पुरूष' समास के पहले दो भेद किये जाते हैं–1. व्यधिकरण तत्पुरूष समानाधिकरण तत्पुरूष है। समानाधिकरण तत्पुरूष का ही दूसरा नाम 'कर्मधारय' समास हैं। हिंदी में सामान्यतया इसे पूर्णत: स्वतंत्र समास भेद माना जाता है, अत: इस पर अन्यंत्र विचार किया गया है।

'तत्पुरूष' समास के पूर्वपद एवं उत्तर पद में विभक्ति संबंध होता है। संस्कृत में कर्ता और संबोधन की विभक्तियों को छोड़कर विभक्तियाँ छ: है–द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी एवं सप्तमी। 'तत्पुरूष' समास में

पूर्वपद एवं उत्तरपद के बीच संबंध का आधार जो विभक्ति होती है, उसी के अनुसार उस तत्पुरूष भेद का नामकरण कर दिय जाता हैं। जैसे—

द्वितीया (कर्म) तत्पुरूष–कठफोड़वा (काठ को फोड़नेवाला)।
तृतीया (करण) तत्पुरूष– आँखो देखा (आँखों से देखा)।
चतुर्थी (सम्प्रदान) तत्पुरूष–रसोई घर (रसोई के लिए घर)।
पंचमी (अपादान) तत्पुरूष–पथभ्रष्ट पथ से भ्रष्ट।
षष्ठी (संबंध) तत्पुरूष–हस्तक्षेप (हस्त का क्षेप)।
सप्तमी (अधिकरण) तत्पुरूष–मुनिश्रेष्ठ (मुनियों में श्रेष्ठ)।

(iii) **कर्मधारय समास**–जिस समास में पूर्व पद और उत्तरपद के मध्य विशेषण विशेष्यभाव संबंध हो। उसे कर्मधारय समास कहते है। विशेषण विशेष्य भाव संबंध से तात्पर्य उस 'संबंध' से है। जिससे एक पद यदि 'विशेष्य' (जिनकी विशेषता बतलाता हो)। सामान्यतया पूर्वपद ही विशेषतावाची होता हैं। जैसे–

नीलकमल (नील वर्ण कमल) कमलनयन (कमल के समान नयन)
किसलय कोमल (किसलय के समान कोमल)

पर कई बार उत्तरपर ही विशेषतावाची होता है, और पूर्वपद विशेष्य रूप। जैसे–चरणकमल (चरण कमलो के समान) करकञ्जो (कर कञ्जों के समान) कई बार दोनों पद विशेषतावाचक होते है एवं विशेष्य पद कोई और ही होता है जिसके विशेषण रूप होकर वे आये होते है, जैसे–

अत्यधिक (अति और अधिक) खटमिट्ठा (खट्ठा और मीठा)
कठिनकोमल (कठिन और कोमल) तरोताजा (तर और ताजा)।

(iv) **द्विगु समास**– संस्कृत के अनुसार कर्मधारय समास का ही एक भेद है। कारण इसका पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण रूप होता है। हिंदी में यह स्वतंत्र समास भेद के रूप मे ही विशेष मान्यता प्राप्त है। पारिभाषिक दृष्टि से जिस समास मे पूर्वपद संख्यावाचक होता है, उसे द्विगु समास कहते हैं। उदाहरणार्थ 'त्रलोक' या 'पञ्चरत्न' पदों को लीजिए। इनके पूर्वपद क्रमशः 'त्री' (तीन) और 'पञ्च' (पाँच) है, जो संख्यावाचक विशेषण रूप है, अतः 'त्रिलोक' और 'पञ्चरत्न' द्विगु समास के अंतर्गत है। अन्य उदाहरणों की तालिका नीचे दी जा रही है–

अठन्नी–आठ आनों का समाहार
चतुर्भुज–चार भुजाओं का समाहार
चवन्नी–चार आनो का समाहार
चौपाई–चार पदों का समाहार
चौराहा–चार राहों का समाहार
छमाही-छह महीनों का समाहार
पंचवटी-पाँच वटों (वृक्षों) का समाहार
पंचरत्न–पाँच रत्नों का समाहार
पंचप्रदीप–पाँच प्रदीपों का समाहार
पंचशील–पाँच शीलों का समाहार
पंचपात्र–पाँच पात्रों का समाहार
पंचफोड़न–पाँच फोड़नों का समाहार

(v) **द्वंद्व समास**– जिस समास में 'पूर्वपद' तथा 'उत्तरपद' दोनों प्रधान हो उसे 'द्वंद्व समास' कहते हैं। दोनों पदों के प्रधान होने से क्या तात्पर्य है। दोनों पदो के महत्वपूर्ण होने से तात्पर्य है, उनके रूप मे आये दोनों ही पदों से जिन-जिन का अर्थ संकेत होता है, उनका समान रूप से महत्वपूर्ण होना। एक उदाहरण लें–मातापिता–यहाँ दो पद हैं–माता (पूर्वपद) और पिता (उत्तरपद)। कहने की आवश्यकता नही कि ये दोनों ही प्रधान हैं, कारण माता जितनी महत्वपूर्ण होती है उतना ही पिता भी। कोई किसी से घटकर नही हैं। इसलिए माता-पिता और तद्वत् दोनों पदों की प्रधानता रखनेवाले अन्य समस्त पद 'द्वंद्व समास' के अंतर्गत आते हैं। इस वर्ग के अन्य उदाहरणों की तालिका नीचे दी जा रही है–

अस्त्रशस्त्र–अस्त्र और शस्त्र घरबाट–घर और बाट (राह)
अहर्निश–अहः (दिन) और निशा (रात्री) चालचलन–चाल और चलन
तरोताजा–तर और ताजा
आजकल–आज और कल दानधर्म–दान और धर्म

(vi) **बहुब्रीहि समास**– जिस समास के 'पूर्वपद' एवं 'उत्तरपद' में कोई भी 'पद' प्रधान नही होता अपितु समग्र भाव से कोई और ही अर्थ प्रधान हो जाता है और संज्ञा रूप अथवा संज्ञात्मक विशेषण रूप होता है, उसे 'बहुब्रीहि समास' कहते है। जैसे–लम्बोदर ऊपर से यह विशेषतावाचक कर्मधारय समास मालूम पड़ता है–लम्बा+उदर (पेट), पर वस्तुत: बात ऐसी नहीं है। कारण यहाँ दोनों पदो में कोई भी पद प्रधान नही हैं, कोई और ही अर्थ प्रधान है, जो यह है–लम्बा है उदर (पेट) जिसका, अर्थात् गणेश (देवता)। इसी प्रकार बहुत से पद देखें जा सकते हैं।

लिंग निर्णय

लिंग निर्णय से तात्पर्य यह होता है कि कोई विशेष सज्ञा पद पुँलिंग वर्ग का है अथवा स्त्रीलिंग वर्ग का, इसका वाक्य में उस पद के सम्यक् प्रयोग द्वारा निर्णय या निश्चम कराना।

लिंग निर्णय कैसे करें।

शब्द विशष का लिंग निर्णय तीन प्रकार से किया जा सकता है-
(क) विशेषण पदो के प्रयोग द्वारा, (ख) संबंध सूचक पदो द्वारा एवं
(ग) क्रिया पदों द्वारा।

जिस शब्द विशेष का लिंग निर्णय करना हो, उसके आगे किसी ऐसे विशेषण पद को रखना चाहिए जो उसका 'लिंग' निश्चित कर दे। यथा–

(i) राम अच्छा 'लड़का' है। (ii) उसे सुनहला 'मौका' मिला।
(iii) नयी 'चाल' चली गई। (iv) अभी आयी 'खबर' क्या हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में काल अक्षरों में छपे वे विशेषण पद हैं, जो क्रमश: 'लड़का', 'मौका', 'चाल' एवं 'खबर' शब्दों का पुँलिंग, पुँलिंग, स्त्रीलिंग एवं स्त्रीलिंग होना सूचित करते हैं।

शब्द विशेष के, (जिसका लिंग निर्णय करना हो) आगे आनेवाले संबंधवाचक पदों द्वारा भी लिंग निर्णय होता है। संबंधवाचक (किसी वस्तु या प्राणी का किसी दूसरी वस्तु या प्राणी से संबंध या नाता बतानेवाले) पद नौ हैं–का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी। इनमें की, री, नी, संबंधवाचक पद अपने बाद आनेवाले संज्ञापदो का स्त्रीलिंग होना सूचित करते हैं, एवं का, के, रा, रे, ना ने संबंधवाचक पद अपने बाद आनेवाले संज्ञा पद का पुँलिंग होना। यह नीचे दिये जा रहे कतिपय उदाहरणों से स्पष्ट हो सकेगा :-

(i) राम का 'कमरा' है। (ii) राम के 'भाई' है।
(iii) राम की 'किताब' है।(iv) मेरा कमरा है।
(v) मेरे भाई हैं। (vi) अपनी किताब है।
(vii) अपना कमरा है। (viii) अपने भाई है।
(ix) अपनी किताब है।

उपर्युक्त उदाहरणों मे 'कमरा' एवं 'भाई' संज्ञा पदो का पुँलिंग होना का, के, रा, रे, ना, ने संबंधवाचक पदों द्वारा सूचित हो रहा है, एवं 'किताब' संज्ञा पद का स्त्रीलिंग होना की, री, नी, संबंधवाचक पदो द्वारा।

शब्द विशेष के क्रिया पदों भी (बशर्ते वह वाक्य में 'कर्त्ता' के रूप मे आया हो) उसका लिंग निर्णय किया जाता है। यथा–

(i) दूर तक 'घास' फैली हैं। (ii) 'चील' आसमान में उड़ती है।
(iii) उनके कानों पर 'जूँ' न रेंगी। (iv) 'साँझ' धीरे-धीरे घिर आयी।
(v) 'बारिश' जोरों से होने लगी। (vi) 'समझ' तो जैसे मारी गयी।

उपर्युक्त वाक्यों में काले अक्षरों में छपे क्रिया पदो द्वारा उनसे संबद्ध वाक्यों मे कर्ता के रूप में आये (अथवा 'उद्देश्य' के रूप में आये) क्रमशः 'घास', 'चील', 'जूँ', 'साँझ', 'बारिश एवं 'समझ संज्ञा पदों का स्त्रीलिंग होना स्पष्ट सूचित होता है।

उपर्युक्त तीन साधनों के अतिरिक्त वाक्य प्रयोग द्वारा किसी संज्ञा विशेष के लिंग निर्णय का और कोई साधन नहीं हैं। यदि तीनों में से किसी भी एक का सहारा लिए बिना ही (शब्द विशेष के) लिंग निर्णय का प्रयास किया गया तो वह बेकार ही होगा उदाहरणार्थ–

1. वह घास पर बैठा हैं। 2. बाज एक पक्षी हैं।

इन वाक्यों से 'घास' एवं 'बाज' संज्ञा पदों का लिंग निर्णय नहीं होता। कारण, इनके आगे न तो कोई विशेषण पद आया हैं न संबंधवाचक पद और न ये 'कर्ता' के रूप में ही आये है कि इनका संबंध क्रिया पदों से हो और उनके द्वारा लिंग निर्णय हो।

मुहावरें और लोकोक्तियाँ

इन वाक्यों को पढ़ें -

(१) हमारे स्कूल का विकास **दिन दूना रात चौगुना** हो रहा है ।

(२) शकुनि बराबर पांडवों के खिलाफ दुर्योधन के **कान भरता** था ।

यहाँ पहले वाक्य में - 'दिन दूना रात चौगुना' और दूसरे वाक्य में - 'कान भरना' मुहावरे हैं । **'दिन दूना रात चौगुना'** का अर्थ है - **'खूब उन्नति'** और **'कान भरना'** का अर्थ है - **'पीठ पीछे शिकायत करना ।'**

मुहावरे ऐसे वाक्यांश होते हैं जो वाक्य को सुसंगठित और सारगर्भित बनाते हैं। इनसे सामान्य नहीं, विशेष अर्थ की प्रतीति होती है ।

उदाहरण के लिए यहाँ कुछ मुहावरें और लोकोक्तियाँ दी जा रही हैं-

(१) **आँख बिछाना** - बाट जोहना - व्रज में गोपियाँ कृष्ण के लिए आँखें बिछाएँ बैठी थीं ।

(२) **कमर टूटना** - निराश होना - कपड़े के व्यापार में बराबर नुकसान होते रहने के कारण मदनलाल की कमर टूट गई ।

(३) **कान काटना** - मात करना - वह छोटा जरूर है, किंतु शतरंज के खेल में बड़े-बड़ों का कान काटता है ।

(४) **किस्मत फूटना** - बुरा समय आना - तुम्हारी किस्मत फूटी थी तभी तो तुमने सरकारी नौकरी छोड़ दी ।

(५) **गले लगाना** - प्रेम करना - माँ ने देखते ही बेटी को गले लगाया।

(६) **पसीने-पसीने होना** - लज्जित होना - घूसखोर व्यक्ति ईमानदार अफसर के सामने आते ही पसीने-पसीने हो जाता है ।

(७) **आसमान टूट पड़ना** - आकस्मिक विपत्ति आ जाना - खेती के दिनों में किसी गरीब किसान का बैल मर गया तो समझो उस पर आसमान टूट पड़ा।

(८) **आसन डोलना** - मन चंचल होना - अप्सराओं के रूप को देखकर ऋषि-मुनियों का भी आसन डोल जाता था ।

(९) **किनारे बैठना** - अलग होना - दुष्ट व्यक्ति की संगति करने के बजाय उससे किनारे बैठना ही हितकर होता है ।

(१०) **जहर उगलना** - अनुचित बात बोलना - घर-परिवार में जहर उगलकर अशांति पैदा मत करो ।

(११) **नमक हराम होना** - उपकार न मानना - मैंने चेतलाल को अपने बेटे की तरह पाला-पोसा, किंतु वह नमक हराम निकला ।

(१२) **पानी में आग लगाना** - असंभव को संभव करना - माउंट एवरेस्ट पर चढ़कर उस लंगड़े लड़के ने पानी मे आग लगा दी ।

(१३) **चार चाँद लगना** - और सुंदर लगना - श्रद्धा के गोरे तन पर नीली साड़ी चार चाँद लगा रही थी ।

(१४) **लाल-पीला होना** - क्रुद्ध होना - तुम मुझपर क्यों लाल-पीले हो रहे हो?

(१५) **अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना** - संकट मोल लेना - सेठजी भोला को अपने बेटे की तरह मानते थे, किंतु उसने उनके यहाँ चोरी करवाके अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मार ली ।

(१६) **जमीन-आसमान एक करना** - कठिन परिश्रम करना - अनिल ने अपने व्यापार को आगे बढ़ाने के लिए जमीन-आसमान एक कर दिया ।

(१७) **डकार न लेना** - हजम करना - गोपाल बाबू ने गोदाम का सारा माल अकेले हड़प लिया और डकार न लिया ।

(१८) **रोटियाँ तोड़ना** - बिना परिश्रम के खाना - अमरकांत कहीं आता-जाता नहीं और न कुछ काम ही करता है। वह घर में बैठे-बैठ केवल रोटियाँ तोड़ता है।

(१९) **सूरज को दीपक दिखाना** - सुविख्यात का परिचय - आपका परिचय देना सूरज को दीपक दिखाना है ।

(२०) **अपनी खिचड़ी अलग पकाना** - दूसरे से अलग रहना - राजेश न किसी को सुनता है और न किसी से कुछ कहता है, वह अपनी खिचड़ी अलग पकाता है।

(२१) **आकाश के तारे तोड़ लाना** - असभव को संभव कर दिखाना - तुम कहो तो मैं तुम्हारे लिए आकाश के तारे तोड़ कर लासकता हूँ ।

(२२) **आग में घी डालना** - क्रोध को भड़काना - तुम मेरे सामने ऐसी बात कहकर आग में घी डाल रहे हो ।

(२३) **गूलर का फूल होना** - लापता होना - सुधीर से भेंट हुए साल बीत गए, इधर उसका अता-पता भी नहीं चलता, लगता है वह गूलर का फूल हो गया है।

(२४) **पत्थर पर दूब जमाना** - असभव को सभव करना - व्यक्ति अपनी मेहनत से पत्थर पर दूब जमा सकता है, बशर्ते कि उसमें आत्मविश्वास हो।

पर्यायवाची शब्द

अग्नि :- आग, वह्नि, पावक, अनल, वायुसखा, दहन, धूमकेतु, कृशानु,

असुर :- दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, यातुधान, निशिचर, निशाचर, रजनीचर

अनुपम :- अपूर्व, अनोखा, अद्भुत, अनूठा, अद्वितीय, अतुल,

अमृत :- पीयूष, सुधा, अमिय, जीवनोदक,

अश्व :- वाजि, हय, घोटक, घोडा, सैंधव, तुरग, तुरंग,

आँख :- नेत्र, लोचन, नयन, चक्षु, दृग, अक्षि, अंबक, दृष्टि, विलोचन